10/10/1966 सोमवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– तू प्यार का सागर है, तेरी एक बूँद के प्यासे हम।
लौटा जो दिया तूने, चले जाएँगे जहाँ से हम.....

ओमशांति! बच्चों ने गीत की लाइन सुनी। गीत बनाया हुआ है आसुरी सम्प्रदाय (...)। जो भी गीत सुनाते हैं या गीत बनाते हैं या शास्त्र पढ़ते हैं या सुनाते हैं, ये तो बच्चों को अभी मालूम पड़ा, समझते कुछ नहीं हैं। विवेक अनुसार, बुद्धि अनुसार जो–2 कुछ भी पढ़ते आए हैं ये गीत वगैरह–2, कोई उनसे कल्याण तो नहीं हुआ है, और ही अकल्याण होता आया है; क्योंकि बाप ने समझाया है कि भक्ति से दुर्गति माना अकल्याण और गाया जाता है कि एक ईश्वर है कल्याणकारी, सर्व का कल्याण करने वाला। अभी तुम बच्चे तो जानते हो कि बरोबर वो तो गाते हैं और तुम जानते हो कि हमारा कल्याण करने आया हुआ है, कल्याण का रास्ता बताय रहे हैं। कि तुम बच्चों का, खास भारतवासियों का और आम सारी दुनियाँ का कल्याण तो करने वाला वही बाप है, जिसको पुकारते रहते हैं और बच्चे अगर दूरंदेश हैं तो ये तो समझते हैं कि कल्याण तो था ही सतयुग में सबका। सतयुग में तो कोई का भी अकल्याण था ही नहीं; क्योंकि या तो सुखधाम में थे या तो शांतिधाम में थे। अभी ये तो तुम बच्चों को बुद्धि में अच्छी तरह बैठा। वो भी बुद्धि से घड़ी–2 थिरक जाता है। ये इतनी जो अच्छी–2 प्वॉइंट्स हैं, जो एक भी प्वॉइंट बुद्धि में रहे तो तुम लोग सदैव ताज़े–तवाने रहें। समझा ना! क्योंकि तुमको रोज़ ज्ञान का घास तो मिलता ही है। अगर तुम विचार–सागर–मंथन करते रहो, जैसे ये जनावर करते हैं ना, जनावरों में भी कुछ अकल है, आजकल मनुष्यों में भी अकल नहीं है। सो भी यहाँ बच्चों में भी इतना अकल नहीं है, जितना जनावर में अकल है। वो बिचारे फिर भी खाते हैं तो फिर उसको उगारते रहते हैं, उगारते रहते हैं। .....जैसे कि उनको खाना मिलता रहता है। तुमको इस समय में भोजन मिलता है बरोबर ज़रूर और बहुत अच्छी तरह से समझते हो। फिर जनावरों के माफिक (...)। बाबा सबके लिए नहीं कहते हैं, वो तो सब जनावर फिर भी उगारते हैं और खाते ही रहते हैं। जैसे कि उनको खाना मिलता है और मौज में रहता है। खा ही रहे हैं जैसे, उगारते ही रहते हैं। तो बाप बैठ करके बच्चों को भी यही ज्ञान घास (...), इसको कहा ही जाता है–ज्ञान घास। योग और ज्ञान। तो बाप बैठ करके बताते रहते हैं कि तुमको जो कुछ ज्ञान मिलता है, उनको फिर कुछ वक्त अच्छी तरह से विचार–सागर–मंथन करते रहो। फिर कुछ करते हैं, कुछ करते नहीं हैं। जो करते हैं फिर उनको सर्विस का शौक है तो करते हैं अच्छी तरह से और जिनको सर्विस का शौक (...) वो करके क्या करेंगे! वो करेंगे ही नहीं और शौक ही नहीं है तो करेंगे भी नहीं। करेंगे तो भी क्या करेंगे, शौक नहीं सर्विस का! कोई को ये ज्ञान का धन देना, फिर 'घास' नाम रख दिया ना बच्चे। इसलिए तो देखो जाते हैं गऊशाला में, तो गऊओं को जा करके घास देते हैं। समझते हैं ये भी एक पुण्य है। यहाँ तो बाप आ करके गऊ चरा रहे हैं। उनको क्या खिलाते हैं? ज्ञान घास। तो बहुत अच्छा खिलाते हैं (और) समझाते हैं कि विचार–सागर–मंथन करते रहो तो खुशी में रहेंगे और धारणा अच्छी होती रहेगी, शौक जागेगा समझाने के लिए; क्योंकि ये तो ठीक है, लोटा पीओ या सारे सागर को हप कर जाओ या ज़रा पीओ, जाना तो है ...। वो है ना– एक बूंद भी (...)। बाबा कहते हैं ना बच्ची– कोई बूंद, ये कहते हैं ना– कोई ने थोड़ा आकर सुना तो भी चला जाएगा स्वर्ग में; क्योंकि स्वर्ग के तो दरवाज़े खुलने ही हैं ज़रूर महाभारत के पिछाड़ी और स्वर्ग की संस्था भी तो ज़रूर तैयार होगी यहाँ। फिर सज़ा भी खा करके होंगे। ये तो जानते हो ... बाबा खुद कहते हैं कि जब प्रदर्शनियाँ होती हैं या कुछ भी समझाते हैं या यहाँ आते हैं, सभी सेन्टर्स पर जाते हैं तो (...)। कि यहाँ तो सारा सागर है, ... हप करना है। ऐसे गाया हुआ है कि

चिड़िया ने सागर को हप किया। तो हप तो नहीं करते हैं। तो बाबा कहते हैं–कोई हप करते जाते हैं, कोई अच्छी तरह से धारण करते हैं, कोई थोड़ी एक बूंद से भी जाना है। ये है ना–एक बूंद, लोटा तो क्या, एक बूंद भी आपकी मिलने से हम स्वर्ग में तो चले जाएँगे। बाकी उनके पिछाड़ी वो तो है ना बच्ची। जितना–2 जो अच्छी तरह से धारण करेंगे और औरों को भी धारण कराएँगे, तो वो तो ऊँच पद पाएँगे। जाएँगे क्यों नहीं बच्ची, एक बूंद से भी; क्योंकि बाबा ने कहा है ना– ये अविनाशी ज्ञान थोड़ा भी जिसने लिया, बूंद भी लिया (...)। देखो, जब मनुष्य मरते हैं, तो गंगा जल की बूंद डाल देते हैं उनको, एक/दो बूंद। सो भी कोई–2 के मुख में, एकदम खतम जैसे होते हैं तो बूंद अंदर भी नहीं जाती है। कोई तो घर में गंगा जल ही पीते हैं। ऐसे बहुत होते हैं बच्चे। बड़े–2 पंडित होते हैं बनारस में, गंगा जल (...) और ये ही घर में ले आते। तो वहाँ तो है भी गंगा जल। गंगा बहती है, वहाँ से जल ले आते हैं, पीते हैं। देखो, कितना पीते होंगे! गंगा तो बड़ी भारी–2 बहती रहती है। अभी उनको तो कोई हप नहीं कर सकते हैं और तुम्हारे लिए गाया हुआ है कि बच्चों ने सागर को भी हप कर दिया। तो देखो, बरोबर सागर को भी तो हप करने वाले होते हैं ना, जो फिर सागर के नज़दीक में चले जाते हैं। तो जानते हो कि ज्ञान सागर तो है ही रुद्र शिवबाबा। सो ज़रूर जो उनको जास्ती हप करते हैं और जो सर्विस करते हैं जास्ती, वही तो रुद्र माला के नज़दीक में जाते हैं ना। तो है तो बरोबर ना। जितना–2 जो उनको हप करते हैं और औरों का भी कल्याण करते हैं, वो अच्छी तरह से पद भी पाते हैं बच्चे। पद तो बहुत ऊँचा है। बाप तो किस्म–2 से समझाते रहते हैं कि जितना–2 जो धारण करेगा, एक तो खुशी भी चढ़ेगी उनको (...)। देखो, जो बहुत धनवान होते हैं ना, उनको खुशी यही होती है–हमको बहुत धन है, हम बहुत दान कर सकते हैं। अंग्रेज़ी में भी उनको कहा जाता है–फिलैंथ्रॉपिस्ट। भई, ये बहुत बड़ा फिलैंथ्रॉपिस्ट/दानी था। कि जो मर गया वो बड़ा दानी था, बहुत दान करते थे, कॉलिजें बनाते थे, धर्मशालें बनाते थे, मंदिर बनाते थे। उनको दानी पुरुष कहा जाता है ना बच्चे। तो यहाँ फिर तुमको मिलते हैं अविनाशी ज्ञान रतन। अभी वो तो है 21 जन्म के लिए खज़ाना। तो जो अच्छी तरह से धारण करेके(करके) औरों को कराएँगे, किनको तो शौक बहुत होता है ना (...)। देखो, वो है हमारा, ये जो बच्चा है अपना प्यारेलाल जी, उनका बच्चा, क्या नाम है? (किसी ने कहा–लक्ष्मण) लक्ष्मण। वो मेरा(मुझे) चिट्ठी लिखते हैं, बोलता है–बस, दिल होती है तो सारा दिन, वो नौकरी भी छोड़ करके, ये प्रोजेक्टर और प्रदर्शनी ले करके हम फिरता रहें। तो वो तो समझते हैं ना कि अच्छा, कोई बूंद भी समझ जाएगा तो भी उनका कल्याण होगा, जास्ती समझेगा उनको भी कल्याण होगा, और भी जास्ती किसको समझाते (...), तो देखो है ना उनको; परन्तु थोड़ा कुछ फिर नौकरी के बंधन में, तो बिचारा पूछते रहते हैं– बाबा, नौकरी भी छोड़ देवें? ये सर्विस में लग जावें? तो उनको बुद्धि में तो है ना। जैसे बाबा भी समझाते हैं बच्चों को–बच्चे, किसको एक बूंद भी मिलती है तो भी उनका कल्याण हो ही जाता है। तो उनको देखो कितना शौक रहता है। तो बाबा उनका गायन करते हैं ना, जिन–2 को शौक होता है। ऐसे दूसरे भी बहुत हैं, ऐसे नहीं (...); पर ये तो बहुत अच्छा शौकिन देखने में आता है। इनको बहुत हिर्स है सर्विस का। ये इनको भी हिर्स है, वो जो डॉक्टर है, उनको भी हिर्स है; परन्तु हैं तो सभी, एक/दो की अवस्था को तो बाबा जानते हैं अच्छी तरह से; क्योंकि सर्विस के साथ अपन में भी तो गुण चाहिए ना बच्ची। अपन में भी ये जो 5 विकार हैं, उनमें न क्रोध होना चाहिए, न कुछ कोई उल्टा–सुल्टा खयालात होना चाहिए। ये भी सब न होना चाहिए ना। वो भी तंदरुस्त चाहिए। बीमार तो नहीं चाहिए ना। ये तन्दरुस्त होते हैं ना। जिनमें ये पांच

विकार कम हैं उसको बाबा कहेंगे– ये बहुत अच्छा तन्दरुस्त है बच्चे; क्योंकि उनमें कोई भी ये बीमारी नहीं है– न काम की, न देहअभिमान की। तो इन बिचारे में देहअभिमान की भी नहीं है। तो बाप महिमा तो करेंगे ना बच्ची। देखो, महिमा भी गाई हुई है कि इस–2 सेना में कौन–2 अच्छे महारथी हैं, कौन अच्छे–2 सर्विसएबुल हैं। तो उनके लिए भी कहा जाता है– बरोबर भई इन्हों की पलटन में भी, आसुरों की पलटन में (...); क्योंकि है तो दोनों की लड़ाई दिखलाई हुई ना– असुरों की और देवताओं की। फिर दिखलाया है कि देवताओं ने जीत पहनी। अभी असुर और देवताओं की लड़ाई तो यहीं गाई जाती है। देवता भी बनते हैं, असुर भी बनते हैं। अभी लड़ाई को असुरों और देवताएँ से (...)। असुर तो रावण के लिए समझाया गया है। भई, जो रावण है ना, इसकी सम्प्रदाय जो है,...इनसे हमारी कोई लड़ाई तो नहीं। हमारी रावण से, असुरों से, ये 5 विकार रूपी असुर, उनसे लड़ाई है। समझा ना! ये शास्त्रों में भले कुछ भी लिखा हुआ है कि देवताओं और असुरों की लड़ाई। पर असुर किसको कहा जाता है? वो तो कोई दूसरे किसम के तो मनुष्य नहीं होते हैं ना। नहीं, स्वभाव है। उसमें नम्बर वन आसुरी स्वभाव है विकार का। देखो, है आसुरी स्वभाव विकार का; इसलिए संन्यासी भी इस आसुरी स्वभाव को, कर्म को छोड़कर भागते हैं। इससे सिद्ध होता है पहले–2 नम्बर में ये हैं आसुरी गुण। गुण नहीं कहवें, अवगुण। तो देखो, वो आसुरी अवगुण तो छोड़ते तो हैं ना और तुम्हारा भी जो है मेहनत, सो तुम्हारा भी यही मेहनत है कि ये जो आसुरी अवगुण है विकार का, ये छोड़ें। अभी वो तो भगाकर बोलते हैं, जंगल में चले जाओ, तो बिछुड़ गए, पीछे तो बात ही नहीं है। तुम्हारे लिए फिर कहते हैं–नहीं, रहें भी घर में, रहें भी स्त्री के साथ और रहें भी फिर पवित्र। ये जो आसुरी स्वभाव है विकार का, वो छोड़ें। तो ये तो मुश्किलात हुई; परन्तु तुम बच्चों को बाप ने समझाया है कि बच्चे, यहाँ तो जब छोड़ते हैं तो उनको तो स्वर्ग का, मुक्ति वा जीवनमुक्ति, दोनों मिल सकती हैं। उनको तो कुछ भी, धूर भी नहीं मिलती है; क्योंकि बाप के साथ योग तो है नहीं; बाप से तो विपरीत बुद्धि हैं। ये तो तुम अच्छी तरह से समझाते हो ना। देखो, कई–2 बहुत अच्छी बातें हैं, जो चित्रों में अभी समझानी होती हैं; क्योंकि चित्र तुमको बहुत दिखलाने हैं अच्छी तरीके से। मनुष्य तो चित्रों का शो करते हैं। देखो, उनमें कोई का फायदा थोड़े ही होता है। उनकी महिमा कितनी होती है! जभी चित्रों का शो होते हैं, अनेक जाते हैं– वाह! बहुत अच्छा। ये बहुत अच्छा। बस, चित्र जा करके देखते हैं। छोटी–सी बच्ची चित्र तो बहुत अच्छा बनाया। उससे क्या फायदा! यहाँ तो इन चित्रों में बड़ा भारी ज्ञान है। जैसे कि ये सभी चित्र ज्ञान से भरे हुए हैं। क्यों नहीं, सागर से निकले हुए ये भी ज्ञान–गंगाएँ हैं एक! इनमें से भी तुम समझाते हो बच्चों को, तो इनसे समझते हैं। समझते हैं तो इनसे तो उनका फायदा हो जाता है ना। फिर ये तो तुम जानते हो कि सभी आते हैं, तो सभी तो नहीं समझते हैं ना कुछ भी। कोई तो ऐसे, ऐसे ही, ऐसे ही, जैसे चरिये होते हैं ना आसुरी स्वभाव वाले, वो कुछ भी समझते नहीं हैं कि ये जो बनाया है इतना, इतना बनाते हैं, इतने बड़े आदमी आ करके इनका उद्घाटन करते हैं, अरे कुछ तो होगा! इनकी मेहनत में कोई तो (...)। वो तो नहीं है इनकी मेहनत, आर्ट–वार्ट की तो कोई यहाँ बात ही नहीं है। ये तो ऐसे नहीं आकर समझा(ते)– देखो, कैसे ऐसे बनाया है! अरे, ये फलानी बच्ची ने बनाया है, ये फलानी बच्ची ने बनाया है। वो तो कुछ है नहीं। वहाँ न नाम लिखा हुआ होता है। उनका तो नाम लिखा हुआ होता है। दो कल गए ना वहाँ, तो चित्र देखा होगा या भक्ता भारत देखा होगा, तो जिसने बनाया होगा, उनका नाम लगा हुआ होगा– ये फलानी ने भरा, वो फलाने ने भरा। आर्टिस्ट भी ऐसे ही होते हैं; क्योंकि उनको भी इनाम मिलते हैं, फलाने ने ये आर्ट बनाया, फलाने ने ये अच्छा काम

किया। ...क्लास वालों का भी ऐसे ही होता है, ...। तो उनको तो कुछ वो ज्ञान तो है नहीं बच्चे। ये तो तुम जाकर समझाते हो। तो (वो) बूंद बिचारा समझ जाते हैं। बस, बाप को भी समझ जाते हैं बरोबर। हम मानते हैं कि हमारा बाबा वो है। उनको याद करना चाहिए। अच्छा, ये भी प्रजा बन जाएगी; क्योंकि अथाह प्रजा बननी है ना। कोई कम थोड़े ही बननी है, अथाह प्रजा बननी है। तो देखो, बाप (ने) समझाया ना बरोबर, मैं हूँ तो सागर, पर वो बूंद भी मिलने से (...)। अभी उस सागर की तो बात नहीं ना। ये तो तुम सुना कि बाप ज्ञान कैसे, ये सारी सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का ज्ञान समझाते हैं। ये समझते हो बच्चे कि बरोबर इन प्रदर्शनियों से या सेन्टर में आने से, हम इसके ऊपर अभी समझाते हैं तो उनका कल्याण होता है। ये तुम बच्चों को समझ है; क्योंकि तुम्हारा भी कल्याण हो रहा है, तब तो यहाँ आते हो। नहीं तो यहाँ क्या कर रहे हो? तुम्हारा ईश्वर द्वारा, जो कल्याणकारी है, तुम्हारा कल्याण करते हैं। फिर वो अपना जो विचार,सागर,मंथन करे, घास खा कर–करके और विचार,सागर,मंथन करते रहे, उनको स्मृति में लाते रहें, तो फिर उनको जास्ती फायदा होता है। अगर स्मृति में न लाया, एक कान से सुना, दूसरे कान से चला गया, तो सर्विस भी नहीं कर सकते हैं। बाप तो ऐसे कहेंगे ना कि भई एक कान से (...), जैसे बाप कहते हैं ना–हियर नो ईविल, सी नो ईविल; ईविल की बात होती है ना। भई, कोई भी उल्टा कोई बात सुनावे, तो एक कान से सुनो, दूसरे कान से चले जाते हैं। तो बाप फिर कहते हैं– मैं तो कोई ईविल बात नहीं, मैं तो बहुत अच्छी बातें सुनाता हूँ। वो तो ऐसे नहीं करो कि बस, इस कान से चुना(सुना), दूसरे कान से निकाल दिया। ये क्यों बाबा कहते हैं? कि निकाल देते हो। बाबा कोई ऐसे नहीं कहते, नहीं (...) देते हो। नहीं धारण करते हो, तब तो किसको समझा भी नहीं सकते हो। नहीं तो समझा तो किसको भी सको ना। उसमें भी बड़े–ते–बड़े नम्बर वन यही एक बात। देखो, कहाँ भी आज कोई से भी बात पूछेंगे तो बस अल्लाह की कि उनको याद करो। बस, वही है सब कुछ। अभी 'वही है सब कुछ', ऐसे तो बहुत ही करते थे। भक्तिमार्ग में बहुत ऐसे हैं बुड्ढे–2, हमारे काके भी होते थे, कभी भी उनसे कुछ बात करो, पूछो–करो, आप ये करते हो, जी बहुत अच्छा काम करते हो। वो करता है, वो कराता है हमारे से। वो बस.....। तो देखो, चित्रों में भी दिखलाया हुआ है ना। अभी हाथ ऊपर में क्यों रखते हैं; क्योंकि वो कल्याणकारी ऊपर में यहाँ रहते हैं। अच्छा, वो रहते हैं ऊपर में, रहते तो हम सभी आत्माएँ भी हैं, ये तो तुम बच्चों को अभी (...); क्योंकि ये जो भी चर्चा होती है, ये तुम बच्चे ही सुनते हो– आत्मा और परमात्मा और इस ज्ञान की बातें। और तो कोई जगह में (...) और तो जगह में ये पुराना भूसा आधाकल्प का। इसको कहा जाता है–भक्ति का भूसा। तो जहाँ भक्ति का भूसा है, तहाँ भई ज्ञान कहाँ से आएगा? भक्ति तो भूसा है ना; क्योंकि ज्ञान है सद्गति करने वाला और भक्ति है दुर्गति करने वाली। तो भूसा न हुआ, तभी क्या हुआ! तभी तो कहा जाता है ना सबको– भई, तुमने(तुम्हारे) पास जो अंदर भक्ति का भूसा भरा हुआ है अर्थात् जो कुछ भी शास्त्र वगैरह पढ़े हुए हो, वो भूसा अभी हमारे सामने नहीं निकालो। हम तो ये सब भूसा निकाल देते हैं। भगवान आ करके देखो सब भूसा निकाल देते हैं ना। बोलते थे–ये देह को भी छोड़ो। सब बात को छोड़ो। अपन को आत्मा समझो। मुझे याद करो। तो तुम्हारा जो विकर्म है ना, ये भक्तिमार्ग में इतना भूसा लगाकर–2 पढ़ते– वो भगवान सर्वव्यापी है, कृष्ण ने इसको मारा, इसको मारा। देखो, ये चरआई, ये जैसे नॉविल्स पढ़ते आए हो, वेस्ट ऑफ टाइम करते आए हो। तो बाप बोलते हैं–देखो, इन बातों को सबको छोड़ो अभी। ये सब बात, ये ईविल बातें हैं। देखो, बाबा कहते हैं ना– उसमें सब आ जाते हैं, भले नॉविल हो या शास्त्र हो। वो बोलते हैं–बच्चे, ये सब बातें भूसा निकाल दो। भक्ति का

भूसा निकाल दो। अच्छा, गाया भी जाता है कि ज्ञान–भक्ति। ज्ञान माना दिन, भक्ति माना रात। तो ज़रूर भूसा हुआ ना धक्का खाने के लिए। ये तो बहुत अच्छी तरह से समझाते हैं। सो फिर बोलते हैं कि बच्चे, ड्रामा के प्लैन अनुसार ये ज्ञान और भक्ति, जिसको दुर्गति कहा जाता है, ये बनी–बनावट खेल है। मनुष्यों इन ज्ञान और भक्ति को और कोई भी नहीं समझते हैं। बस, ज्ञान तो है नहीं, तो भक्ति ही बादशाही है। तो भक्ति–4 और फिर ये कहते भी हैं बरोबर कि भक्ति जब पूरी हो जाएगी तब फिर भगवान आएगा। अभी भक्ति पूरी हो जाएगी, भगवान आ करके सद्गति देगा। ये कहते हैं–फल देगा। अच्छा, फल देगा, तो वो तो निष्फल हैं ना तभी, जो फल माँगते हैं। तो भक्ति से तो निष्फलता हो जाती है ना। फिर बाप जभी आते हैं तभी आ करके फल देते हैं कोई भी हालत में; परन्तु वो उल्टा कर दिया, भक्ति की बड़ी महिमा कर देते हैं; क्योंकि ज्ञान है नहीं। अभी जब तुमको ज्ञान मिलता है तो भक्ति से बिल्कुल ही नफरत करते हो; क्योंकि उसने तो हमको नीचे उतार दिया, गिर गए एकदम। कुछ भी उनमें सार नहीं। बाप खुद भी आकर कहते हैं– बच्चे, इन सभी वेद,ग्रंथ,जप,तप,भक्तिमार्ग, इन सबमें कोई सार नहीं रखा हुआ है। तो जिस–2 में सार नहीं रखा हुआ है, देखो कपड़ा पहनते–2 सड़ा हुआ हो जाता है ना, ये भक्तिमार्ग में अभी इस समय में तुम्हारा कपड़ा बिल्कुल ही सड़ गया है। सतयुग और त्रेता में तो अच्छा था ना बच्चे। पीछे आस्ते–2 भक्तिमार्ग में ये तुम्हारा जो शरीर है, जिसको वस्त्र भी कहते हैं, वो सड़ गया हुआ है। अभी सड़ा वस्त्र कहाँ तक पहनते रहोगे? इसलिए बाप कहते हैं कि बच्चे, ये जो भक्ति है, वो तो दुर्गति होती है। ये किसको मालूम नहीं है; क्योंकि ज्ञान नहीं है। ये सब वेद,ग्रंथ,शास्त्र वगैरह इन सबको वो लोग ज्ञान समझते हैं; फिलॉसॉफी समझते हैं और ज्ञान समझते हैं। इनको ये मालूम ही नहीं है बच्ची कि स्प्रिचुअल नॉलेज किसको कहा जाता है, रूहानी ज्ञान किसको कहा जाता है और ये शास्त्रों का ज्ञान किसको (...) जाता है। कोई को भी पता नहीं है। क्यों? पता कैसे पड़े! जबकि बाप आए और समझाए, तब पता पड़े ना। तो तुम बच्चों को नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार (...)। अभी तुम जान गए कि वो भक्ति है और ये ज्ञान है। ज्ञान देने वाला ही एक है, और तो दूसरा है नहीं। अच्छा, वो तो सागर है। फिर बाबा ने अच्छी तरह से समझाया– कई तो सागर को हप कर लेते हैं, जो जाकर विजयमाला के दाने नज़दीक (...)। पीछे देखो, कितनी बड़ी विजयमाला सूर्यवंशी और चंद्रवंशी, रुद्रमाला कितनी बड़ी होगी जो यहाँ बनने की है। तो जिसको फिर यहाँ शिवबाबा की माला बनाने का शौक है, बस वो तो माला बनाने में ही लगते रहेंगे; क्योंकि सर्विस (...)। बाबा क्यों आए हैं यहाँ? अपनी माला बनाने के लिए, समझा ना! रुद्रमाला बनाने के लिए; क्योंकि सभी यहाँ आ गए हैं, फिर इनको वापिस जाना है और जाना उसी जगह में है जहाँ कि पहले थे। तो तुम जानते हो कि बरोबर वो तो छोटी माला है। माला तो देखो कितनी बड़ी है! उसमें भी बाला दिखलाई हुई है। सृष्टि पर आएँगे तो नम्बरवार ना बच्चे। ऐसे तो कभी नहीं कि एक/दो के पहले आ जाएँगे। नाटक में एक्टर्स हैं, उनका भी एक्ट टाइम पर नूँधा हुआ है। जिसका जो टाइम होगा उसमें वो एक्टर आएगा, अंदर आकर पार्ट बजाना। जिसका होगा ही नहीं वो थोड़े ही अंदर आ जाएगा कुछ पार्ट बजाने। और नहीं, उनका पार्ट ही पीछे है। तो ये भी देखो कितनी समझ की बात है। जो एक्टर्स वहाँ इनकारपोरियल दुनिया में, निराकारी दुनिया में रहते हैं, उनकी भी कैसे नम्बरवार वहाँ स्थापना होगी, जो अपने–2 समय पर आते जाएँगे। ऐसे नहीं कि बीच से कोई निकल करके आ जाएँगे भाग करके। सब नम्बरवार एकदम। देखो, ये बेहद का ड्रामा भी कैसे बना हुआ है। ...तो बाप बैठ करके समझाते हैं बच्चों को कि मीठे बच्चों, थोड़े में राज़ी मत हो जाओ;

अच्छी तरह से ज्ञान की धारणा करो, सागर को हप करो, अच्छी तरह से हप करो। हप कैसे करें? जैसे बाप बैठ करके सबको ज्ञान देते हैं अच्छी तरह से, वैसे तुम भी अच्छे से धारण कर और करो, और करते हैं। बाकी ये तो तुम समझते हो कि बरोबर ये जितनी समझाते हैं, कोई एकर–बेकर (...)। तो यहाँ भी तुम समझते हो कि 25 बरस में भी कोई एकर–बेकर में ज्ञान है। समझा ना! बाकी तो देखो, कितने हैं, या तो चले जाते हैं, बाकी थोड़े में ही हैं। कोई अच्छे होशियार हैं, जो जा करके कुछ अच्छा काम करते हैं। तो ऐसे–2 टीचर्स भी निकलते जाते हैं और अच्छे–2 वो अच्छा पद पाएँगे और जो टीचर नहीं बनते हैं, वो तो बरोबर स्कॉलर ही रहेंगे, प्रजा ही रहेंगी। तो कोशिश करनी चाहिए अच्छी तरह से। सारा दिन यही बुद्धि में, अभी ओह! खुशी का पारा, अभी बाकी थोड़ा समय है, गए। ये बहुत छीः–2 दुनिया है! इसमें रह–रहकर हम तंग हो गए हैं; परन्तु क्या करें, जब तलक हमने इसको पावन न बनाया है, सर्विस न की है, तब तलक ये पुरानी दुनिया तो खतम होगी नहीं (और) खतम होने की है ज़रूर। ये तुम बच्चे जानते हो कि खतम ज़रूर होने की है। उनके लिए तैयारियाँ बहुत अच्छी हो रही हैं; परन्तु जब तलक खतम हो (...)। अभी देखो ये भी तो समझ गए बाकी 9 बरस (...)। अच्छा, 9 बरस में भी हमको कितना काम, सर्विस करनी है। कितनी है, कितना–2 गाँव है, कितना करना है! होनी तो है ज़रूर। सारे भारत में तो क्या, विलायत में भी चक्कर लगना तो है ज़रूर; क्योंकि बच्चे, अख़बार के जरिये तो विलायत में बहुत पता पड़ जाता है। तो अख़बार में तुम्हारी जब सीढ़ी भी पड़ेगी, ये भी पड़ेंगे, अरे! ये तो समझ जाएँगे झटपट कि दुनिया की आयु कितनी है। ये मनुष्य जो गपोड़े लगाते रहते हैं, वो सभी क्लीयर हो जाएँगी। फिर ये ज्ञान प्रायः लोप हो जाएगा। फिर मनुष्य बैठ करके बनाएँगे ऐसे–2 चक्कर, बनाया हुआ है चक्कर, बाबा का देखा हुआ है शास्त्रों में। वहाँ कोई ने ऐसे–2 लीका दिखाया है, कोई को कोई ये जो स्वास्तिका लगाया है, तो कोई आधा–उधा ऐसे–2 लीका दे दिया। कुछ भी नहीं है। लीका निकाले हैं। जैसे बाबा कहते थे ना, जब पहले ज्ञान आया तो दिवाल के ऊपर जा करके हम लीका निकालते (थे), समझ में कुछ नहीं आता है। ...निकालते थे, पर समझ में नहीं आता था–मैं क्या कर रहा हूँ? चक्कर कैसे...? तो ऐसे ही फिर उस बेसमझी में वो भी बैठ करके लीके निकालते हैं, समझते कुछ भी नहीं हैं कि चक्कर ज़रूर है, वर्ल्ड की हिस्ट्री और जाग्राफी का चक्कर ज़रूर है। तो वो बैठ करके कुछ–न–कुछ बनाते हैं। यहाँ तो बाप बैठ करके बिल्कुल अच्छी तरह से कायदे अनुसार समझाते हैं, जिससे फिर तुम अपना पद भी पाते हो; क्योंकि बाप आए ही हैं तुम बच्चों को फिर से स्वर्गवासी बनाने। ये समझना तो सहज है ना बच्ची कि भारत स्वर्गवासी था और फिर भारत की बड़ी महिमा करते हैं अख़बारों में भी– प्राचीन है, भारत की बड़ी महिमा है, बहुत यहाँ भगवान–भगवतियाँ राज्य करके गए हैं, लक्ष्मी–नारायण राज्य करके गए। और कोई दुनिया पर थोड़े ही ऐसे कोई राज्य करके जाते। महिमा तो बहुत करते हैं। बस, भारत प्राचीन है, बहुत पुराना देश है, ऐसा है, ऐसा है। अभी उनको ये मालूम नहीं, जो ऐसा था, ये कचड़ा बना है। वो भी कहते हैं, गीत गाते हैं ...अच्छा भारत, भारत ऐसे था, जिसमें सीता थी, फलानी थी, ये थी। अरे, सीता थी, पर उनकी भी निंदा करके, वो समय को भी खराब कर दिया। समझा ना! सीता जैसी तो थी; परन्तु सीता जैसी क्या थी? बस, पतिव्रता थी। बस, दुख में वो वनवास में भी उनके साथ थी। इसलिए वो बैठ करके स्त्रियों को फँसाने के लिए भक्तिमार्ग में दासियाँ बनाने के लिए चित्र भी बनाय दिया है कि भई, लक्ष्मी नारायण का भी पाँव दबती थी तो देखो, पतिव्रता थी ना। तो बिचारे पति भी थक करके आते हैं, दो पाँव दबाते हैं। तो वो सीखकर ...ये संन्यासी भी पाँव दबाते हैं। अपनी स्त्रियों

को छोड़ करके फिर वो चटचेलियाँ बनाय करके उनसे भी पाँव दबाते हैं। बाबा ने ऐसे बहुत देखा है। ढेर, समझा ना! माइयाँ जाती हैं भला भावना की। कभी उनकी भावना थोड़ी कुछ पूरी हो गई, तो मरी उनके पिछाड़ी एकदम। अल्पकाल क्षणभंगुर सुख की भावना कोई भी पूरी हुई तो मरी। यहाँ तो तुम जानते हो कि हमारी 21 जन्म सुख की की भावना पूरी हो रही है और इसमें कोई भी पाँव–वाँव दबाने की कोई बात नहीं। ये तो सिम्पल पढ़ने की बात है। बाप कैसे आ करके (...), कोई साधु–संत तो बनता ही नहीं है, और ही खुद आ करके बोलते हैं, द्रौपदी का भी पाँव दबाया। अभी अर्थ तो कोई ने समझा ही नहीं, न कोई द्रौपदी को 5 पति ही थे। ये तो बनावट है। न कोई बैठ करके बोला। ये तो बाबा (ने) समझाया है कि बाबा आ करके कहते हैं–बच्ची, तुम भक्ति में थक गई हो ना। तो ऐसे ही हँसी–कूड़ी के लिए, अच्छा, अभी हम तुम्हारा सब थका दूर कर देते हैं। तो वो तो तुम जानते हो कि बरोबर अभी समझा, भक्तिमार्ग में धक्का खाना है। एकदम थक गए हैं, पतित बने हैं। दुनिया एकदम गंदी बन गई। देखो, दुनिया का हाल ही क्या है! अभी हमारा सब थका दूर बाबा आ करके करते हैं, कल्याण करते हैं। फिर हम कभी भी दुख ही नहीं देखेंगे– कोई प्रकार का दुख नहीं, जरा भी दुख का नाम–निशान नहीं। बाकी क्या होता है? कि ऊँचा पद चाहिए। तो जितना पद ऊँचा होगा, भई सुख भी जास्ती होगा ना, बँगला भी तो अच्छा बड़ा–2 होगा ना। वो बँगले सभी तो हीरे–जवाहरों के नहीं बनेंगे ना। तो फ़र्क तो ज़रूर फिर भी तो होगा ना। फिर ये भी तो, ये तो समझ में आता है ना– ये भी कर्म का हिसाब है ना; क्योंकि वो राजा बना है, वो फलाना बना है। तो भी तो ऐसे कहेंगे ना, पास्ट में इन्होंने कर्म ऐसा किया है जो ये राजा बना है, ये गरीब बने हुए हैं। ये तो ज़रूर समझ में तो आएगा ना; क्योंकि दुनिया तो कोई खतम तो होती नहीं है ना। ये भी जो पद है, ये भी तो पद है ना। ये तो ज़रूर गाएँगे ना–भई, इसका ऊँचा पद है। ज़रूर फिर ये तो कहेंगे ना–इन्होंने भी कर्म ऐसा अच्छा किया है जो इतना ऊँचा पद है। वहाँ का कुछ काम खराब नहीं होता है, पर गायन तो फिर भी होना चाहिए ना कि ये जो बड़े बनते हैं, साहुकार बनते हैं, वो बनते हैं, कुछ फ़र्क तो दिखाई देगा ना, तो ज़रूर इन्होंने ऐसा कुछ किया है आगे, तो ये ऊँचा पद पाया। आगे, उन बिचारों को मालूम नहीं पड़ता है; क्योंकि अभी तो बाप बैठ करके इनको ऐसे कर्म सिखलाते हैं जो ऐसे कर्म वाले बनते हैं। तो ज़रूर समझेंगे तो सही ना– भई, ये गरीब है, ये साहुकार है, ज़रूर कर्म का ये फल है। तो ये बाप आ करके, शिवबाबा कर्म सिखलाते हैं, जिससे वो ऐसे बने हैं। तुमको भी कहते हैं–कर्म ऐसा करो जो ऊँच पद पाओ। नहीं तो वहाँ भी तो यूँ तो समझेंगे ना–भई, इसने कुछ आगे अच्छा कर्म किया है, जो राजा बना है; उसने कुछ ऐसे कर्म किया है जो ये बना है। कर्म तो फिर भी कहेंगे तो सही ना। अच्छा, बाकी यहाँ ज़रूर है कि यहाँ कर्म कोई भी करे तो भी दुख है। वहाँ कोई भी हैं, गरीब हैं, वहाँ तो सभी सुख है; क्योंकि वो स्वर्ग है। कुछ फ़र्क तो है ना। यहाँ भी ऐसे ही कहते हैं, वहाँ भी ऐसे ही कहिए। वहाँ उनको मालूम नहीं है कि स्वर्ग के लिए कौन कर्म कराते हैं। सो तो बाप कहते हैं–मैं कर्म,अकर्म,विकर्म की गति जानता हूँ। बरोबर वहाँ साहुकार–गरीब, दुखी कोई नहीं; क्योंकि रावण राज्य नहीं। पर वो जो है फ़र्क फिर, कोई राजा है, कोई कैसा है, कोई कैसा है, कोई कैसा है, तो भी समझ तो होगी ना बुद्धि में– ये क्यों राजा बना है। तो भी ये तो रहेगा ना– ये पास्ट में (...); क्योंकि दुनिया तो चलती है ना, पास्ट में। तो देखो, इस समय में तुम जो–2 जैसा–2 करेंगे ऐसे–2 वहाँ फल पाएँगे। तो कर्म तो करना ही है ना। ये कर्मक्षेत्र है ना बच्चे। कैसे–2 कर्म करते हैं! कोई बहुत अच्छा कर्म करते हैं, जैसे बाबा महिमा की कि रोज़। रोज़ तो कोई की एक–2 की महिमा नहीं होती है ना। बाबा मिसाल देते हैं कि देखो,

वो बच्चा को बहुत तात लगी हुई है सर्विस की। बाबा, हमारे में कोई खामी है क्या, मैं इतनी सर्विस नहीं कर सकता हूँ? नहीं, जितना होती है, जितना कर सकेंगे, सर्विस तो आगे बढ़ती जाएगी। आपे ही ऑटोमैटिकली सबकी सर्विस वृद्धि को पाती रहेगी। ढेर हो जाएँगे सर्विस करने वाले। निकलते जाएँगे सर्विस करने वाले भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। चलो बच्ची, टोली ले आओ। कहें जल्दी होवे, जल्दी होवे; परन्तु पढ़ाई टाइम सीमित हो जाएगा ना, जल्दी तो जा नहीं सकेंगे। बाकी अर्थ तो दो है ना कि बाकी थोड़ा रोज़ है। बाकी फिर पुरुषार्थ करें, जो हम वहाँ भी ऊँचा पद पावें। हाँ, ये तुम चक्कर लगाओ, उठाते जावें, एक–2 उठाते जावें। उठो। आपे ही एक–2...। अच्छा, अभी समझा! तो गऊ तो गाई हुई है, कृष्ण की गऊ। अभी कृष्ण की गऊ तो नहीं हैं, ये शिवबाबा के बच्चे हैं। तो बाबा ये ज्ञान घास खिलाते हैं। बोलता है, इन सब बातों को फिर से उगारते रहो, विचार–सागर–मंथन करते रहो; क्योंकि औरों को सुनाना है। धारणा पक्की हो जावे और खुशी का पारा भी चढ़ना चाहिए बच्चों को रोज़। ये समझाना चाहिए कि बाकी 10 बरस हैं। अरे, वैसे 10 बरस भी बहुत लम्बी आयु है; परन्तु क्या करें! सृष्टि भी कोई थोड़ी छोटी थोड़े ही है। सर्विस भी तो बहुत करनी है। सबको (...), पैगाम्बर हो ना बच्चे। पैगम्बर के बच्चे पैगम्बर हो; मैसेन्जर के बच्चे मैसेन्जर हो। मैसेज तुमको कोई भी प्रकार से (...)। अभी जा करके तुम मैसेज दे नहीं सकते हो। तो अख़बार द्वारा भी तुम(तुम्हारा) मैसेज पहुँचेगा। ये तुम एक दिन देखेंगे कि अख़बारों में भी ये चित्र निकलेंगे, बड़ी–2 अख़बारों में; क्योंकि बड़ी–2 अख़बारें सब जगह जाती हैं। बहुत उनकी कितनी लाखों–2 होती हैं! तो ज़रूर लाखों मनुष्य पढ़ते होंगे ना। यहाँ की अख़बार विलायत में जाती हैं, विलायत की अख़बार यहाँ आती हैं किस्म–2 की। तो ये तो बहुत नाम होगा इसका। ये तो बहुत अख़बारों में तुम्हारे ये चित्र। और तो कुछ नहीं कर सकेंगे जास्ती। कुछ तो जाएँगे, कुछ फिर ये चित्रों से। तुम्हारे चित्र से ऐसे अच्छी तरह से वो समझ जाएगा, जो समझ जाएगा कि ये जो भी हैं, ये बरोबर फादर ही नॉलेज दे सकते हैं, और कोई नॉलेज नहीं दे सकते हैं। बाकी नॉलेज तो समझ जाएँगे। बाकी मेहनत है ये जो मन्मनाभव की, वो तो पीछे नहीं सब कोई ऐसे बन सकते हैं ना। वो तो फिर जैसे ड्रामा का प्लैन है, ऐसे ये भारतवासी ही मेहनत करते हैं, जो फिर यहाँ स्वर्ग का (...)। बाकी तो सब चले जाएँगे हिसाब–किताब चुक्तू कर। जिसको जो पार्ट मिला हुआ है, वो अपना उसी अनुसार हिसाब–किताब चुक्तू करके, फिर भी तो वही एक्टर्स वापस जाएँगे, नम्बरवार वही आ करके अपना एक्ट करेंगे। अभी समझा ना बच्ची! ये तो तुमको सारी दुनिया के एक्टर्स, ये ड्रामा के एक्टर्स (...)। इतने धर्म हैं, उसमें भी मुख्य धर्म तो यही है। बिगिनिंग टू एण्ड। अभी बिगिनिंग टू एण्ड ये तुम्हारा धर्म है, अरे! ये कोई भी मनुष्य नहीं जानते हैं। विद्वान–आचार्य–पंडित के बुद्धि में ये नहीं है कुछ। तुम्हारे बुद्धि में कि तुम ही बैठे हो, तुम ही 84 पूरा किया है, इसलिए तुम्हारी बुद्धि में बैठेगा। और कोई के बुद्धि में बैठेगा ही नहीं। ये ज्ञान ऐसा वण्डरफुल है। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग।